

VIVEKANANDA COLLEGE  
THAKURPUKUR  
KOLKATA-700063

NAAC ACCREDITED 'A' GRADE

Topic: TEXT PORTION OF RAJBAHANCARITAM

Course Title: RAJBAHANCARITAM

Paper: CC3

Unit: 2, Section -B

Semester: 2<sup>ND</sup>

Name of the Teacher: Abhishek Das

Name of the Department: Sanskrit

अनुसूचित शब्द (2)

Aug 17	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Moh	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
								1	2	3	4	5		
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31			

July 2017

14 Friday

Appointment

परिचय

तुमुले चास्मिन् समये अनियन्त्रित प्रवेशः - 9

न + अस्मिन् समये + अनियन्त्रित 10

अस्मिन् तुमुले च समये - एतस्मिन् आकुले समये -

एते लघुव्यञ्जने

अस्मिन् - अनियन्त्रित प्रवेशः - अनिरुद्ध गमनागमनकारिणः

शास्त्रे प्राथम्ये उपरं ह्यत्र विद्यते वदन्तः च। 14

- किं किम् इति सदृशोपसृत्य विविशुर्नार्वशिक पुरुषाः 15

सदृशा + उपसृत्य विविशुः + अन्तर्वशिक पुरुषाः

सदृशा - अतर्कितम् किं किम् इति - किम् एतत् घटितम् - 18

- उपसृत्य - उपगम्य विविशुः - प्रविष्टाः - 19

- अन्तर्वशिक पुरुषाः - अन्तःपुरदक्षिणः। 20

दृष्ट्वाथ तदवस्थं राजकुमारम्।

दृष्टुः + च तन् + अवस्थम् गच्छात्तन् वाच्यम्।

दृष्टवनाः तथा स्थितम् चक्षुः 325 चक्षुः अर्थात् चक्षुः।

Aug 17	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
									1	2	3	4	5	
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31			

(2)

July 2017

16  
Sunday

Appointment

तदनुभावनिश्चयनिग्रहच्छासु सद्य एव  
ते तमर्थं प्रपुवर्मणो निवेदुयाञ्जकः।

तत् + अनुभावनिश्चयनिग्रहच्छा + त्व

तदनुभावेन - तस्यप्रभावेन - वाञ्छयात्प्र

निश्चयनिग्रहच्छाः - उद्विग्न कण्ठ शोण निश्चय शक्ति

सद्य एव - तस्मिन् क्षणे - अर्थ इच्छा

ते - कस्युक्तवत् तमर्थं - तत् वस्तु -

- प्रकृत्युक्तम्

प्रपुवर्मणो - प्रपुवर्मणः

निवेदुयाञ्जकः - निवेदितवनाः - निवेदनक

→ निश्चय कण्ठ

5

aturday

Appointment

9

July 2017

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29	30	31					

July 17

~~কল্যাণ~~

৩ সূত্র থেকে এই অন্তিম সূত্রী-সম্বন্ধে পদপুস্তক  
 যোগ্যত্বলাভের মধ্যে অন্তিম সূত্রী-সম্বন্ধে  
 লক্ষ্য। যেহেতু ইহা হল অসম্পূর্ণ অন্তিম সূত্রী-সম্বন্ধে  
 ২৮ বিজ্ঞানের দ্বারা অসম্পূর্ণ সূত্রী-সম্বন্ধে। অসম্পূর্ণ  
 সূত্রী-সম্বন্ধে ইহা হল অসম্পূর্ণ সূত্রী-সম্বন্ধে এবং  
 ইহা বিজ্ঞান দ্বারা হল না। যেহেতু অন্তিম সূত্রী-সম্বন্ধে  
 ইহা হল, ইহা হল-সম্বন্ধে ইহা হল অসম্পূর্ণ সূত্রী-সম্বন্ধে  
 অসম্পূর্ণ সূত্রী-সম্বন্ধে ইহা হল অসম্পূর্ণ সূত্রী-সম্বন্ধে।  
 অসম্পূর্ণ সূত্রী-সম্বন্ধে (২৩ সূত্রী-সম্বন্ধে) ইহা হল  
 ইহা অসম্পূর্ণ সূত্রী-সম্বন্ধে। (ইহা সূত্রী-সম্বন্ধে  
 ইহা সূত্রী-সম্বন্ধে ইহা হল।

✍

July 17

Aug 17	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
								1	2	3	4	5		
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31			

8

July 2017

20

Thursday

Appointment

सोऽपि कौपादागत्य निर्दुहन्निव

सः + अपि कौपात् + आपात्य निर्दुहन + इव

सः कौपात् + आपात्य निर्दुहन + इव

दुहन्नागभया दृशा निशाम्यात्पन्न प्रत्यभिज्ञः

(प्रश्न) आग्रागर्द इति

निशाम्य + उत्पन्न प्रत्यभिज्ञः

कथं स एवैष मनुजमरण निमित्तभूतायाः

↓ एव + एष मत् + अनुजमरण निमित्तभूतायाः

आग्रागर्द इति (अ) आग्रागर्द इति (अ) आग्रागर्द इति (अ)

पापायाः वालचन्द्रिकायाः पत्युश्च्यभिनिविष्टुवित्तदुर्पक्ष्य

पत्युः + अति + अभिनिविष्टुदुर्पक्ष्य

पापिष्ठीय मन्त्रिकायाः

अति + अभिनिविष्टुदुर्पक्ष्य

वैदुशिक वणिक-पुत्रस्य पुष्पादुवस्य मित्रं रूपमत्तः

वैदुशिक वणिक-पुत्रस्य पुष्पादुवस्य मित्रं रूपमत्तः

कलाभिमाने नैकविधविप्रलम्भापाय

न + एकविध - विप्रलम्भ + उपाय

कलाक्रियया वाक्यार्थे शब्द रस गति उपाय उपाय उपाय

पाटवावजितमद पाटजन मिथ्या रोपित वितथ दुवतानुभाव

पाटव + आवर्जित + मद + पाटजन मिथ्या + आरोपित वितथ

देवता + अनुभावः

पाट उपाय उपाय उपाय (अ) उपाय

Aug 17	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
									1	2	3	4	5	
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31			

(C)

July 2017

22

Saturday

Appointment

कपटधर्मिक श्रुतों निगूढ पापशील श्रुतियों

श्रीव्यास

पापशीलः + श्रुतः

( कपट धर्मिक श्रुतों/पापशील श्रुतों का अर्थ है - 10

ब्राह्मणवृत्तः, कथमिवैनमनुरक्ता मातृशौचपि

मातृशौच + अपि

ब्राह्मणाप्यमः, कथम + इव + एतम + अनुरक्ता

ब्राह्मणवृत्तः

किं कथं एव प्रति अनुरक्तः 2 अर्थ

मातृशौच + अपि

पुरुषादिभ्यो

आवमाना

अत्र 3 अर्थ

पुरुषादिभ्यः

(क)

अत्र 3 अर्थ

पापेयमवन्तिशुद्धी

पापा + इयम + अवन्तिशुद्धी

पापशुद्धी 2 अर्थ

अवन्तिशुद्धी 1

✍

23  
Sunday

July 2017

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29	30	31					

Appointment

১ অনুষ্ঠানের কাজ থেকে সংবাদ পোথ এতদ্বারা মুক্ত হয়ে  
 ২ বাসা কামতে কামতে চন্দ্রবর্মা অনুষ্ঠানে উপস্থিত হন।  
 ৩ বৈশ্য স্থাপন দ্বারা সৃষ্টিমিত বাসকামতে কে দেখে চিনতে  
 ৪ পারেন, এই ব্যক্তি (বাসকামতে) তার বেশি দারুণকার  
 ৫ রত্যাগী সুশোভনের বন্ধু দারুণকার সুস্থের কারণে  
 ৬ যে ~~কি~~ বালচন্দ্রিকা। সেই বালচন্দ্রিকার স্বামী <sup>২য়</sup> এতদ্বারা  
 ৭ <sup>গর্ভিত</sup> বাসকামতে বিদেশী বনিদেয় সুশোভন, তার বন্ধু <sup>২য়</sup>  
 ৮ বাসকামতে ১] বাসকামতে নিজে সৌন্দর্যে গর্ভিত,  
 ৯ অপরিতপ্ততি কলমদ্বিত্যে পারদর্শী, বহুসংখ্যক বণ্ডনা  
 ১০ সার্বনে দক্ষতা অর্জনকারী, স্বর্গ সুবর্গীদের দ্বারা  
 ১১ স্থিত্যাদেবতার হেত (অর্ধ্য সুবর্গীরা বাসকামতে  
 ১২ দেবতা বলে হেত) তার গুণে আকর্ষিত,  
 ১৩ ~~সু~~ কামতের আবরণে আবৃত আশাচারণকারী,  
 ১৪ হেওন সুভার মিসির্ষ, স্বাক্ষার্ষম ব্যক্তি।  
 ১৫ চন্দ্রবর্মা দুইতে আছেন না, তাঁর হাত সুসুগতি

(9)

Aug 17	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
										1	2	3	4	5
	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31		

July 2017

24  
Monday

Appointment

କର୍ତ୍ତାମାନ ଥାକା ଅଭିଭୂତା କି କହେ ପାରିବି  
~~କର~~ ଭେଦିଭୁକ୍ତୀ ଏହି ~~କି~~ ବାକ୍ସରୁମାନେ ସ୍ୱାମୀ  
 କାମ ସ୍ୱୀକାର କରା ?



Aug 17	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
										1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31			



Appointment \_\_\_\_\_

চন্দ্রমা অমনিম্বুদ্বীপ প্রতি অত্রস্থ বুদ্ধাং শ্যে  
 বাক্যবাহনকে আশ্রিত দিতে উদ্যত হলেম। ~~সকলকে~~ বন্দনেন  
 অর্থাৎ আচরণকারিণী - দুন্দ-কন্দাঙ্গিনী - অমনিম্বুদ্বীপ  
 দেখুক, কিন্তু তার স্বামী (বাক্যবাহন) কে আজ-ই  
 মূলে আয়োজিত করুক করা হবে, এইভাবে তিরস্কার  
 করতে করতে অশ্রুতে পুঙ্খবিলে দ্বারা ললাট (কণা) বিকৃত  
 করে [কণা কুঁচকে] যখনদোষে গাশ্রবন যেন হানকালো  
 তখনই বিকৃত কালো বর্কে মোড়া দিয়ে বানানো কঠিন  
 হাত দিয়ে, বাক্যবাহন বাক্যবাহন হাত [এই শব্দে  
 বহুলা পদ্য ও চক্র চিহ্নে অর্থাৎ বাক্যবাহন ললাট  
 বিকৃত] হবে অর্থাৎ আচরণ করুন।

*(Handwritten mark)*

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29	30	31					

27 Thursday

July 2017

Appointment

9 स तु स्वभावधीरः सर्वपारुषातिभूमिः  
 10 सर्वपारुष + अतिभूमिः  
 11 सहिष्णुता + एक + प्रतिक्रियां दुर्वीमैव तामापदमवधार्य  
 12 सहिष्णुता + एक + प्रतिक्रियाम् दुर्वीम + एव ताम् + आपदम् + अवधार्य  
 13 ६६ इह तस्या दुःसंगामिनि ! दुःसकथायाः ।  
 इह तस्या दुःसंगामिनि ! दुःसकथायाः ।

14 [वर्तमान] अत्र नृ पृथक्पृथक् शब्द नृपयः पृथक्पृथक् ! शब्दवृत्तान्तः

15 सद्यस्व वासु । मासद्वयम्, इति

16 प्रीतिरुत् । मन्त्रिणः ! इति

17 प्राणपरित्यागराशिणी प्राणसमां

18 प्राणपरित्यागराशिणी- अतिवृत्त्या (पृथक्)

20 समाश्रास्य अश्विश्यतामथाधीत् ।

समाश्रास्य + अश्विश्यताम् + अधीत्

सम + आश्रास्य

आश्रास्य कर्त्, अश्विश्यताम् श्रीकार कर्त्(मन्त्र)

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
								1	2	3	4	5	
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31		

২০

July 2017

28  
Friday

Appointment

আম্নান মিন্দ দোষে বাসবাসন কিছু স্থিরও অচিন্ত  
 বর্ণনায়। প্রকৃতিত গম্বীর এক অকল প্রকার তোলা উত্তর  
 আর্গন যের বাসস্থান (বাসবাসন) অধিভুক্তকে  
 দৈনন্দিন : : : : : মিন্দে একমাত্র প্রতিভা  
 অথবা অধিক ফলাফল অধিব [এমন কথা চিন্তা করে  
 অধিবস্থানকে বলালে — যে কামিনী! পূর্ণমাত্রায়  
 অধিবস্থানের অধি অধিব কর, হৃদয় আশ্রয় কর,  
 এভাবে অধিবস্থান করত অধিবস্থানী উদ্যোগী  
 অধিবস্থান বর্ণী অধিবস্থানী কে আম্বস্ত কর  
 অধিবস্থান (চন্দ্রমণ্ডল) অধিব স্থিতি করলে।

☺

29

Saturday

July 2017

22

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29	30	31					

Appointment

अथ विदितवार्तावाता महादेवीमालवन्दु  
 अथ विदितवार्तावाता महादेवीमालवन्दु  
 विदितवार्ता + आता मालव + इन्द्र

अनुर इतानु ज्जेने सुशित इन्द्र महादेवी उ मालवसि  
 जामातरमाकार पक्षपातिनावात्मपरत्यागापन्यासेनारिणा

अथ जामातरमाकार पक्षपातिनावात्मपरत्यागापन्यासेनारिणा  
 जामातरम + आकर पक्षपातिनाम + आत्मपरित्याग + उपन्यासेन + अरिणा

जामात वामराशुस आकर लक्ष प्रशक्तः प्रा विप्रमन् कृण वैठिपानन कृण  
 मन् 6 पुठकीव मन्

विदितवार्ता

जिघांस्यमानं ररदातुः ।

विदितवार्ता वृषभतुः

शुभकृत शुक (सुभाजक) कृण कर्णहिले ।

न शोकतुस्त तमप्रभुत्वादुत्तरयितुमापदुः ।

न शोकतुस्त तमप्रभुत्वादुत्तरयितुमापदुः ॥ 9 ॥

शोकतुस्त तम + अप्रभुत्वादु + उत्तरयितुम + आपदुः  
 ताम् अशुभेन उग्रय कृण कर्णहिले विदित  
 (वामराशुस)

অতঃপৰৱৰ্তী অৱস্থাত স্কুলত অৱস্থানত ৩

স্বাধীনতা গৃহীত হ'ল। স্বাধীনতা বাস্তৱায়নৰ আকাৰ  
 লেখ (স্বা) ~~স্ব~~ প্ৰকাশনাত্মক শব্দ (স্বত্বস্বত্বতঃ) নিজেদেও  
 আন্তৰ্জাতিক ওয় লেখিয়ে বাস্তৱায়নকে শত্বা কৰত  
 শব্দক মনু চমুৱাৰ্হৰ হাত থেকে স্বাধীনতা বাস্তৱায়নকে  
 স্বত্বা কৰেছিলে, কিন্তু পুত্ৰত্ব (অস্থায়ন আৰ্হীত  
 বা স্বাক্ষৰ বা স্বত্বতা বা স্বাক্ষৰ) বা স্বাক্ষৰ  
 মিত্ৰ থেকে উদ্ধাৰ কৰতে পাৰিলে না।

২২শতাব্দীঃ - ২২শ + মিত্ + অনুস

\* মিত্ (অতীতকাল) | পৰোক্ষ মিত্ -

পাম্	থাম্	পাম্
অনুস্	অথুস্	ব
ওস্	অ	ম

১৮  
 বন্ধৰ অৱস্থাত  
 (দুৰ্ভাগ্য স্বত্বতঃ)  
 যা স্বত্বতঃ, তাৰ  
 পৰোক্ষ।  
 ২০  
 অৱস্থাত (অৱস্থাত)  
 পৰোক্ষ অৱস্থাত  
 (অৱস্থাত) মিত্ স্বত্বতঃ

শৌক্যঃ - শক + মিত্ + অনুস

২০১৭ | উদ্বৃশ্ - উদৃশ + মিত্ + ওস  
 বিবিশ্ - বিশ্ + মিত্ + ওস

NOTE  
~~অৱস্থাত~~

31

Monday

28

July 2017

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29	30	31					

Appointment

- 9 स किं च अपुशीलपुवर्मा
- 10 (अ२) अपुशीलः + अपुवर्मा  
कामपुत्रवविभिषे चपुवर्मा
- 11 सर्वमिदमुदन्तजातं राजराजगिरां तपस्यते
- 12 सर्वम् + इदम् + उदन्त जातम् दुःखं च पाशे उपश्रुत  
अ२ इव अ२ कैलासे
- 13 दुर्षसाशयं संदुश्य सर्वमेव
- 14 दुर्षसाशयं संदुश्य सर्वमेव  
दुर्षसाशयं निरागतं कवे अ२
- 15 पुष्पोद्भवकुटुम्बकं सर्वस्वदृष्टपूर्वकं
- 16 पुष्पोद्भवः आश्रीयः परिवृत्तः अधश्चरन्तः प्रथमं शर्वं कवे  
सर्वस्व - दृष्ट - पूर्वकम्
- 17
- 18 सद्य एव बन्धने क्षिप्त्वा कृत्वा च
- 19 अ२ कामपुत्रे विरुष कवे
- 20 राजवाह्यं राजकेशरिं किशोरकमिक
- कामपुत्रः अ२ किशोरकम् + इव  
आश्रय इव
- दासपुत्रनिबद्धं (दास - पित्र - निबद्धं)
- आश्रयिणिकं पित्रे निबद्धं कवे

Sept 17	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1	2	3	4	5	6	7	8	9
	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
	24	25	26	27	28	29	30							

22

August 2017

1

Tuesday

Appointment

मूर्धजजालविलीन चूडामणिप्रभाव

मूर्धजजाल - विलीन - चूडामणि - प्रभाव

भाषा: कर्मणामिव दार्ढ्यं प्रकृतं ह्यज्जानितं प्रलाये

विक्षिप्तशून्यपिपासादिशैवं च तमवधूतदुहित्

वि - शून्यपिपासादि - शैवं

तम + अवधूतदुहित्

शून्य शब्द शून्य - प्रकृतिकारणं ह्य शब्द च, तारक कर्माय (अज्ञाननिवर्त)

प्रार्थनस्य दुःखराजस्योद्धरणायानुश्रियास्थान

प्रार्थनस्य + दुःखराजस्य + उद्धरणाय + अनुश्रियान् + आश्रियास्थान

प्रार्थनस्य अर्थः प्रार्थना स्थितिः प्रत्याधानं कार्याभूत्वा

अर्थः अन्वयान्तरं उन्मूलनाय

उद्धरणं कर्माय उक्तं

अनुश्रियाय अर्थः प्रार्थना कर्माय अनुश्रियाय

अनन्यविश्वासनिनाय । रुरोध च

अनन्यविश्वासान् + निनाय । अवबोधं कर्त्तव्यं

आत्मनः प्रति विश्वासं न शक्यं नित्यं ज्ञानम्

वैलाभरदुत्तकम्पाम् ।

वैलाभरदुत्तकम्पः + चम्पाम्

वैलाभरदुत्तकम्पः कर्मिणः चम्पा कर्माय

9

10

11

16

17

18

19

20

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
									1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31		

Wednesday

Appointment

9 কোম্পানীতে চাকরী এই সময় বৃত্তান্ত  
 10 কৈলাস পর্বতে তপস্যাতে দর্শনার্থকে জানিয়ে  
 11 পুষ্করিণীতে স্বদেশ আত্মীয়-স্বজন যথাসম্ভব  
 12 অর্পণ করে, তৎসম্বন্ধে তাদের কাব্যগানে নিবেদন  
 13 করিলেন, ত্রিংশতাব্দে স্বত বাক্যবাহনকে দাওঁ যোগ্য  
 14 আশ্রয় করে, অশ্বিনিকাকে বিবাহে প্রার্থনা প্রত্যাখ্যান  
 15 করায় ~~স্বত~~ অশ্বিনিক ত্রিংশতাব্দে উদ্ভেদ করায়  
 16 অতিশ্রমে অশ্বিনিক আক্রমণে শূন্য হয়ে কারো উপর  
 17 বিদ্রোহ না থাকায় পুনের স্বার্থে পুনারো চতুর্দশাব্দে  
 18 পুনারে স্থাবী-বিদ্রোহাদি কষ্টে দুঃখপে এইসময়  
 19 বাক্যবাহনকে সঙ্গে নিলেন, অশ্বিনিকাবাহনী  
 20 চন্দ্রাবতী সৈন্যদের পদতলে কলিত হন।



दाङनः पदलालित्यम्

किं नाम पदलालित्यम्? कथं च एतेन  
काव्यस्य माहात्म्यम् अभिवर्धते?

सुप्तिङन्तं पदमिति। सुबन्तं तिङन्तं

च पदमित्यभिधीयते। ललितस्य भावो

लालित्यं माधुर्यमिति। यत्र पदेषु बाक्येषु

शब्दसंघटनायां माधुर्यं श्रुतिसुखद्वयं वा

समुपलभ्यते, तत्र पदलालित्यमिति मन्यते।

पदलालित्यं शब्दसौष्ठवं च आवर्जयति

सचेतसां चेतांसीति गुणे ह यं गरिमाणं

तनुते काव्यस्य।

दशकुमारचरिते एतस्य गुणस्य गौरवं

दृश्यते। यथा,

राजहंसो नाम घनदर्पकन्दर्पसौन्दर्यसौन्दर्य

हृद्यनिरवद्यरूपो भूपो बभूव। (पूर्वपीठिका,

उच्छ्वासः-१)

एकम् अपरमुदाहरणम्-

'यथा मृगया ह्यौपकारिकी, न

तथान्यत्, मेदो ह्यपकर्षादङ्गानां

स्वैर्यकार्कश्यातिलाघवादीनि, शीतोष्णवातव

र्षस्फुत्पिपासासहस्रम्, सत्त्वानामवस्थान्तरेषु

चिञ्चेष्टितञ्जानम्' इति।

(उत्तरपीठिकायां विष्णुचरिते. ८)

एवं संलक्ष्यते दङ्गिनः कृतौ शब्दयोज

नसौष्ठवं-अनुप्रासमाधुर्यं-यमकयोजनं

-वर्णनवैशद्यम्-उच्च्यवर्णपरिहाराक्षितं- रम्यं

वर्णनम्-उक्तिप्रत्यूक्तिप्रशस्तं पदे पदे

पदलालित्यम्।

